भारत - जिम्बाब्वे संबंध

भारत और जिम्बाब्वे के अतीत काल से घनिष्ठ और मधुर संबंध रहे हैं। मुन्हुमुतापा साम्राज्य के दौरान, भारतीय व्यापारियों ने जिम्बाब्वे के साथ वस्त्रों, खनिजों और धातुओं का व्यापार करते हुए मजबूत संबंध कायम किए थे। मुन्हुमुतापा के शाही घराने की सन्तान ने अपनी शिक्षा को व्यापक बनाने के लिए भारत की यात्रा की थी। 17वीं सदी में जिम्बाब्वे का एक महान सपूत डॉम मिगेल - राजकुमार, पादरी और प्रोफेसर और मुतापा की राजगद्दी के उनके उत्तराधिकारियों - ने गोवा में अध्ययन किया था। गोवा के एक गिरजाघर में एक शिलालेख आज भी मौजूद है जो उसकी बौद्धिक प्रतिष्ठा को श्रद्धांजलि देता है।। भारत ने जिम्बाब्वे को उसकी आजादी की लड़ाई में साथ दिया। पूर्व प्रधान मंत्री श्रीमती इंदिरा गांधी पूर्व प्रधान मंत्री श्रीमती इंदिरा गांधी ने 1980 में जिम्बाब्वे के स्वाधीनता समारोह में भाग लिया था

विगत समय में उच्च स्तर पर द्विपक्षीय अथवा एनएएम जैसी शिखर वार्ताओं में भाग लेने के लिए दौरे होते रहे हैं। पूर्व प्रधान मंत्री श्री वाजपेयी और राष्ट्रपति मुगाबे ने वर्ष 2003 में संयुक्त राष्ट्र महासभा और एनएएम शिखर वार्ताओं के समय दो बार मुलाकात की थी।

भारत की ओर से जिम्बाब्वे के दौरे

1980 - प्रधान मंत्री श्रीमती इंदिरा गांधी ने जिम्बाब्वे के स्वाधीनता समारोह में भाग लेने के लिए।
1986 - प्रधान मंत्री श्री राजीव गांधी ने एनएएम शिखर वार्ता में भाग लेने के लिए।
1989 - राष्ट्रपति श्री आर. वेंकटरमन।
1991 - प्रधान मंत्री श्री नरसिम्हा राव ने सीएचओजीएम सम्मेलन में भाग लेने के लिए।
1995 - राष्ट्रपति डॉ0 शंकर दयाल शर्मा।
1996 - प्रधान मंत्री श्री एच. डी. देवेगौड़ा ने जी-15 सम्मेलन में भाग लेने के लिए।

जिम्बाब्वे की ओर से भारत के दौरे

1981 - राष्ट्रपति रॉबर्ट गैब्रियल मुगाबे
1983 - राष्ट्रपति रॉबर्ट गैब्रियल मुगाबे ने सीएचओजीएम और एनएएम सम्मेलनों में भाग लेने के लिए।
1987 - राष्ट्रपति मुगाबे - अफ्रीका फण्ड समिट।
1991 - राष्ट्रपति मुगाबे - नेहरू पुरस्कार प्रस्तुति

1993 - राष्ट्रपति मुगाबे

1994 - राष्ट्रपति मुगाबे- जी-15 सम्मेलन

2015 - राष्ट्रपति मुगाबे- आई ए एफ एस - III सम्मेलन

वर्ष 1996 से 2005 के बीच दोनों पक्षों की ओर से कोई उच्च स्तरीय अथवा मंत्री स्तरीय दौरे नहीं हुए थे। तथापि, जिम्बाब्वे की ओर से वर्ष 2006 से मंत्री स्तर पर नियमित आधार पर यात्राएं हुई हैं, जिसकी शुरूआत 5 और 6 अक्टूबर, 2006 को नई में 3 कोमेसा मंत्री स्तरीय बैठक और 9 से 11 अक्टूबर के दौरान भारत - अफ्रीका प्ररियोजना साझेदारी पर तीसरी गोष्ठी के लिए उद्योग एवं अंतर्राष्ट्रीय व्यापार मंत्री महामहिम श्री ओबर्ट मपोफू के नेतृत्व में एक उच्च स्तरीय शिष्टमंडल की यात्रा के साथ हुई। विगत तीन वर्षों के दौरान दौरों की आवृत्ति बढ़ गई है।

उप प्रधान मंत्री सुश्री टी. खुपे के नेतृत्व में एक सात सदस्यीय प्रतिनिधिमंडल ने 24 फरवरी से 2 मार्च 2010 तक महिलाओं के लिए सूक्ष्म वित्तीय पहलों के संबंध में अध्ययन दौरे के लिए भारत की यात्रा की थी। लघु एवं मध्यम उद्यम और सहकारी विकास मंत्री सुश्री एस. जी. न्योनी ने 12 से 17 मार्च 2010 तक नई दिल्ली में 'अफ्रीका में एसएमई व्यवसाय और परियोजनाएं' में भाग लिया। खान एवं खनन विकास मंत्री मिस्टर ओ. एम. एमपोफू ने रत्नाभूषण निर्यात संवर्धन परिषद द्वारा 12 से 13 अक्टूबर 2010 को आयोजित खान एवं विपणन सेमीनार में भाग लेने वाले एक उच्च-अधिकार प्राप्त प्रतिनिधिमंडल का नेतृत्व किया।

विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी मंत्री ने 1-2 मार्च 2012 को नई दिल्ली में आयोजित प्रथम भारत-अफ्रीका विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी मंत्री सम्मेलन में भाग लिया। इसके अलावा, उप राष्ट्रपति मुजुरू ने नई दिल्ली में 18 से 20 मार्च 2012 तक आयोजित 8वें सीआईआई-एक्सिम बैंक कॉन्क्लेव, जिसमें जिम्बाब्वे एक फोकस देश था, में भाग लेने वाले एक प्रतिनिधिमंडल का नेतृत्व किया। जिम्बाब्वे गणराज्य की सीनेट की अध्यक्ष माननीया सुश्री एडना मैडजोंग्वे ने 3 से 4 अक्टूबर 2012 को नई दिल्ली में आयोजित 'वूमेन स्पीकर्स ऑफ पार्लियामेंट ऑन जेंडर सेंसिटिव पार्लियामेंट्स' की 7वीं बैठक में भाग लेने वाले एक प्रतिनिधिमंडल का नेतृत्व किया।

वाणिज्य एवं उद्योग मंत्री प्रो0 वेल्शमैन एनक्यूबे ने जनवरी 2012 में मुम्बई में और बाद में जनवरी 2013 में आगरा में भारत-अफ्रीका वाणिज्य मंत्री सम्मेलन में भाग लेने के लिए दौरा किया। उन्होंने मार्च 2013 में नई दिल्ली में आयोजित 9वीं सीआईआई-एक्सिम बैंक कॉन्क्लेव में भाग लेने वाले एक प्रतिनिधिमंडल का भी नेतृत्व किया। कृषि, यंत्रीकरण एवं सिंचाई विकास मंत्री मिस्टर जोसेफ मादे ने

4 से 6 फरवरी 2014 को नई दिल्ली में आयोजित एशिया-अफ्रीका एग्री-बिजनेस फोरम में भाग लिया। एक उच्च अधिकारप्राप्त प्रतिनिधिमंडल, जिसमें उद्योग एवं वाणिज्य मंत्री मिस्टर माइक बिम्हा और एसएमई मंत्री श्रीमती एस. न्योनी के साथ अन्य शामिल थे, ने 9 से 11 मार्च 2014 को दिल्ली में आयोजित सीआईआई- एक्सिम बैंक कॉन्क्लेव में भाग लिया। महिला बैंक की स्थापना का अध्ययन करने के लिए जुलाई, 2014 में महिला मामले, जेंडर एवं सामुदायिे विकास मंत्री सुश्री ओप्पाह सी जेड मुचिंगुरी ने भारत का दौरा किया। अक्टूबर, 2015 में आयोजित आई ए एफ एस - III में भाग में लेने के लिए राष्ट्रपति मुगाबे के साथ वित्त एवं आर्थिक विकास मंत्री श्री पैट्रिक चिनमासा और एस एम ई एवं सहकारी विकास मंत्री सुश्री एस जी सी नयोनी ने भारत का दौरा किया। पूसा संस्थान, नई दिल्ली में आयोजित ई आई एम ए एग्रीमैच इंडिया 2015 में शामिल होने के लिए दिसंबर, 2015 में कृषि, यंत्रीकरण एवं सिंचाई विकास मंत्री डा. जोसफ माडे ने भारत का दौरा किया।

भारत की ओर से वर्ष 2011 के बाद से निम्नलिखित मंत्री स्तरीय दौरे किए गए:

क) वाणिज्य एवं उद्योग राज्य मंत्री श्री ज्योतिरादित्य सिंधिया ने सितंबर 2011 में एक व्यावसायिक प्रतिनिधिमंडल का नेतृत्व किया।

ख) वाणिज्य एवं उद्योग मंत्री श्री आनंद शर्मा ने जुलाई 2012 में एक व्यावसायिक सेमीनार में भाग लिया। उन्होंने मार्च 2013 में द्वितीय संयुक्त व्यापार समिति की बैठक के लिए भारतीय प्रतिनिधिमंडल का नेतृत्व भी किया। द्वितीय संयुक्त व्यापार समिति की बैठक में लिए गए निर्णयों की समीक्षा के लिए श्री शर्मा ने एक प्रतिनिधिमंडल के साथ फरवरी 2014 में पुन: दौरा किया।

ग) इस्पात मंत्री श्री बेनी प्रसाद वर्मा ने 8 से 10 अप्रैल 2013 तक एक प्रतिनिधिमंडल का नेतृत्व किया।

घ) जल संसाधन मंत्री श्री हरीश रावत ने 12 से 13 अप्रैल 2013 तक एक वापकोस प्रतिनिधिमंडल का नेतृत्व किया।

ङ) आई ए एफ एस - III में शामिल होने के लिए जिम्बाब्वे के उच्चाधिकारियों को आमंत्रित करने के लिए सूचना एवं प्रसारण राज्य मंत्री कर्नल (सेवानिवृत्त) राज्यवर्धन राठौर ने 26 और 27 अगस्त, 2015 को जिम्बाब्वे का दौरा किया।

भारत जिम्बाब्वे के मानव संसाधन विकास एवं क्षमता निर्माण के प्रयासों से जुड़ा रहा है। जिम्बाब्वे के लोगों के बीच आईटीईसी और आईसीसीआर की छात्रवृत्तियां लोकप्रिय हैं। वर्ष 2012-13 के दौरान, जिम्बाब्वे द्वारा 257 आईटीईसी/आईएएफएस प्रशिक्षण स्लॉटों/आईसीसीआर छात्रवृत्तियों (आईटीईसी

180, आईएएफएस 62 और आईसीसीआर 15) का लाभ उठाया गया था। 2013-14 में, 204 आई टी ई सी / आई ए एफ एस प्रशिक्षण स्लाटों / आई सी सी आर छात्रवृत्तियों का उपयोग किया गया (आई टी ई सी 162, आई सी सी आर 20 और आई ए एफ एस 22) और 2014-15 में कुल 202 आई टी ई सी / आई ए एफ एस प्रशिक्षण स्लाटों / आई सी सी आर छात्रवृत्तियों का उपयोग किया गया (आई टी ई सी 177, आई सी सी आर 14, सी वी रमन फेलोशिप 03, आई ए एफ 08)। जिमट्रेड के सहयोग से भारतीय विदेश व्यापार संस्थान ने 17 से 21 नवंबर 2014 तक हरारे में अंतरराष्ट्रीय व्यवसाय पर कार्यपालक विकास कार्यक्रम संचालित किया तथा इसी तरह का एक अन्य कार्यक्रम 9 से 13 मार्च 2015 तक बुलावायो में संचालित किया गया।

वर्ष 2003 में जब जिम्बाब्वे में भारी सूखा पड़ा, तब भारत ने 50,000 टन चावल की सहायता प्रदान की थी। 23 मार्च 2015 को 500 टन चावल की इसी तरह की एक और सहायता प्रदान की गई। भारत ने जिम्बाब्वे में एसएमई (भारत - जिम्बाब्वे प्रौद्योगिकी केंद्र), जो 4 अगस्त 2008 को राष्ट्रपति रॉबर्ट मुगाबे द्वारा उद्घाटित परियोजना है, के संवर्धन के लिए 5 मिलियन यूएस डॉलर का अनुदान प्रदान किया। इस परियोजना का अंतिम चरण फरवरी 2013 में पूरा हुआ है। भारत ने वर्ष 2012 में तीन 'होल-इन-दी-वॉल' कम्प्यूटर अधिगम केंद्र स्थापित किए थे। भारत आई ए एफ एस-I के तहत एक व्यावसायिक प्रशिक्षण केंद्र तथा आई ए एफ एस-II के अंतर्गत एक खाद्य परीक्षण प्रयोगशाला और एक ग्रामीण प्रौद्योगिकी पार्क स्थापित करने की प्रक्रिया में है। इसके अलावा भारत सरकार की ओर से 28.6 मिलियन अमरीकी डालर मूल्य की ऋण सहायता (एल ओ सी) के तहत डेका पंपिंग स्टेशन तथा नदी जल इंटेक प्रणाली के उन्नयन का कार्य प्रगति पर है। बुलावायो ताप विद्युत संयंत्र के जीर्णोद्धार / उन्नयन के लिए आई ए एफ एस - III के दौरान अतिरिक्त समय में नई दिल्ली में 27 अक्टूबर, 2015 को 87 मिलियन अमरीकी डालर मूल्य के एक अन्य ऋण सहायता (एल ओ सी) करार पर जिम्बाब्वे सरकार और भारत के आयात - निर्यात बैंक के बीच हस्ताक्षर किए गए। 49.92 मिलियन अमरीकी डालर मूल्य के भारत के आयात - निर्यात बैंक के क्रेता ऋण के तहत, मैसर्स अशोक लेलैंड लिमिटेड ने अक्टूबर, 2015 में पर्यटन एवं अतिथि सत्कार उद्योग मंत्रालय को लगभग 635 वाहनों एवं अतिरिक्त पुर्जों की आपूर्ति की। भारत के आयात - निर्यात बैंक की समान सुविधा के तहत बी ई एम एल लिमिटेड, इंडिया ने हवांजे कोलियरी कंपनी लिमिटेड, जिम्बाब्वे को 13.03 मिलियन अमरीकी डालर मूल्य के खनन उपकरणों तथा ब्लास्ट होल ड्रिल एवं अतिरिक्त पुर्जों की आपूर्ति की। जिम्बाब्वे के उप राष्ट्रपति फेलकीजेला मफोको द्वारा 19 जून, 2015 को खनन उपकरण राष्ट्र को समर्पित किए गए।

आर्थिक

दोनों देशों के बीच कुल द्विपक्षीय व्यापार लगभग 133 मिलियन यूएस डॉलर है जबकि जिम्बाब्वे में भारतीय निवेश 50 मिलियन यूएस डॉलर से भी कम रहे। जिम्बाब्वे के हाल ही में एक 'लुक ईस्ट पॉलिसी' का अनुसरण करने के साथ, भारत को एक महत्वपूर्ण व्यापारिक भागीदार के साथ-साथ व्यावसायिक भागीदार के रूप में देखा जा रहा है।

द्विपक्षीय व्यापार

वर्ष (अप्रैल - मार्च)	जिम्बाब्वे को निर्यात (मिलियन अमरीकी डालर में)	जिम्बाब्वे से आयात (मिलियन अमरीकी डालर में)
2002-2003	15.83	14.04
2011-2012	171.72	6.89
2012-2013	147.65	1.71
2013-2014	132.78	नगण्य
2014-2015	178.29	.71

(स्रोत : वाणिज्य एवं उद्योग मंत्रालय की वेबसाइट: www.commerce.nic.in और भारतीय विदेश व्यापार सांख्यिकी, वाणिज्यिक आसूचना एवं सांख्यिकी महानिदेशालय, कोलकाता तथा जिमट्रेड/जिमसेटेट)

भारत और जिम्बाब्वे ने जनवरी 1987 में संयुक्त आयोग करार पर हस्ताक्षर किए थे। अब तक आयोग की चार संयुक्त बैठकें हो चुकी हैं- पहली अप्रैल 1987 में नई दिल्ली में; दूसरी फरवरी 1989 में हरारे में; तीसरी अक्टूबर 1990 में नई दिल्ली में और चौथी जनवरी 1996 में हरारे में। मुख्यत: जिम्बाब्वे की आर्थिक उथल-पुथल के कारण 1996 के बाद से संयुक्त आयोग की कोई बैठक नहीं हुई। संयुक्त आयोग की पांचवीं बैठक की तारीखें तय की जा रही हैं।

फरवरी 2012 में नई दिल्ली में वाणिज्य एवं उद्योग मंत्रालय में एक एसओएम का आयोजन हुआ था, उसके बाद मार्च 2013 में हरारे में द्वितीय संयुक्त व्यापार समिति की बैठक हुई।

भारत और जिम्बाब्वे के बीच हरारे में 19 जून 2014 को वायु सेवा करार पर हस्ताक्षर किए गए थे।

जिम्बाब्वे के व्यावसायिक प्रतिनिधिमंडलों के दौरों की आवृत्ति पिछले कुछ वर्षों में बढ़ गई है और भविष्य में जिम्बाब्वे की अर्थव्यवस्था में बदलाव से कृषि-प्रसंस्करण, खनन, दूरसंरचार, ऊर्जा एवं औषधियों के क्षेत्रों में भारतीय कंपनियों के लिए व्यापक अवसर खुल सकते हैं। भारत की ओर से, सीआईआई और फिक्की के एक-एक प्रतिनिधिमंडल ने क्रमश: नवंबर 2013 और मई 2014 में जिम्बाब्वे का दौरा किया और व्यावसायिक सेमीनारों तथा बिजनेस-टू-बिजनेस बैठकें की।

इंडियन रेलवे कन्स्ट्रक्शन कंपनी (आईआरसीओएन), रेल इंडिया टेक्नीकल एंड इकोनॉमिक सर्विसेज (राइट्स), वाटर पावर कंसल्टेंसी सर्विसेज (वापकोस) और टेलीकम्यूनिकेशंस इंडिया लिमिटेड (टीसीआईएल) ने विगत समय में जिम्बाब्वे के साथ सफलतापूर्वक सहभागिताएं की हैं।

किर्लोस्कर और जैन इरिगेशन ने पम्पों और सिंचाई उपकरणों की आपूर्ति की है। कुछ भारतीय कंपनियां खनन- कोयला, ग्रेनाइट, सोना और हीरा- में निवेश की उम्मीद कर रही हैं।

भारत ने जिम्बाब्वे में औषधि के क्षेत्र में मजबूत उपस्थिति दर्ज कराई है और भारतीय दवाइयां स्थानीय बाजार में आसानी से उपलब्ध हैं। रैनबैक्सी और इपका लैब्स लिमिटेड ने जिम्बाब्वे के स्वास्थ्य क्षेत्र के साथ व्यावसायिक संबंध भी स्थापित कर लिए हैं। "श्रेया" नामक एक भारतीय औषधि कंपनी ने जिम्बाब्वे की सबसे बड़ी दवा कंपनी 'कैप्स लिमिटेड' में 1 मिलियन यूएस डॉलर का निवेश किया था। भारत की मैसर्स चढ्ढा पावर को विक्टोरिया फॉल्स के निकट ह्वान्गे थर्मल पावर स्टेशन के चार यूनिटों को नवीकृत करने के लिए अप्रैल 2008 में एक संविदा अधिनिर्णीत की गई थी।

जिम्बाब्वे में कुछ अन्य भारतीय कंपनियों द्वारा किए गए निवेशों का ब्यौरा इस प्रकार है:

सर्फेस इनवेस्टमेंट ने लगभग 1.5 मिलियन यूएस डॉलर के निवेश से हरारे के निकट एक मल्टी सीड खाद्य तेल उत्पादन संयंत्र स्थापित किया जो प्रतिदिन 120,000 बोतल खाद्य तेल का उत्पादन करने में सक्षम है। यह परियोजना 74:26 के शेयरिंग आधार पर मिडेक्स ग्लोबल प्राइवेट लिमिटेड, इंदौर और जिम्बाब्वे के ओद्योगिक विकास निगम के बीच एक संयुक्त उद्यम है।
ग्राफैक्स कॉटन प्राइवेट लिमिटेड- 100 प्रतिशत विदेशी स्वामित्व वाली ईपीजेड कंपनी- ने 2.5 मिलियन यूएस डॉलर का निवेश किया है। जिम्बाब्वे के सन्याती और माउंट डार्विन में एक कॉटन-गिनिंग संयंत्र है। कंपनी ने हरारे में आर्डबेनी में प्रति वर्ष 3000 टन लिन्ट से धागा और कपड़ा बनाने की एक स्पिनिंग परियोजना स्थापित करने और माउंट डार्विन में एक तेल निकालने का संयंत्र लगाने की योजना है।

पीएम इलैक्ट्रॉनिक्स जिम्बाब्वे बिजली आपूर्ति प्राधिकरण (जेसा) को ट्रांसफार्मरों का निर्यात कर रहा है। कंपनी ने जेसा एंटरप्राइजेस- जो जेसा की सहयोगी कंपनी है- के साथ हरारे में एक ट्रांस्फॉर्मर निर्माण परियोजना के लिए प्रौद्योगिकी हस्तांतरण करार पर हस्ताक्षर किए हैं।

अपोलो टायर्स ने डनलप साउथ अफ्रीका, जिसकी सहयोगी कंपनी डनलप जिम्बाब्वे है, में 200 मिलियन यूएस डॉलर का निवेश किया है।

टेक्नोफैब इंजीनियरिंग लिमिटेड, दिल्ली ने वर्ष 2013 के आरंभ में मुटारे, हरारे, चितुंगविजा, क्वेक्वे, चेगुतु और मासविंगो में जल आपूर्ति एवं सीवेज प्रणालियों के पुनरुद्धार के लिए 30 मिलियन यूएस डॉलर के तीन ऑर्डर अर्जित किए। यह परियोजना वित्त मंत्रालय, जिम्बाब्वे सरकार की ओर से क्राउन एजेंट्स द्वारा वित्तपोषित है।

एंजलिक इंटरनेशनल लिमिटेड, दिल्ली को वर्ष 2013 में जिम्बाब्वे सरकार द्वारा "आपातकालीन ऊर्जा अवसंरचना पुनर्वास परियोजना" कार्य के लिए संविदा अधिनिर्णीत की गई थी। परियोजना को ए एफ डी बी द्वारा प्रशासित मल्टी - डोनर निधि द्वारा वित्त पोषित किया गया। यह परियोजना जुलाई 2014 में पूरी हो गई।

अन्य भारतीय फर्म इन्ड्योर (प्राइवेट) लिमिटेड को ह्वांगे थर्मल पावर स्टेशन में एश प्लांट के पुनरुद्धार और स्तरोन्नयन के लिए अगस्त 2013 में 11 मिलियन यूएस डॉलर की संविदा प्राप्त होने की रिपोर्ट प्राप्त हुई थी।

टाटा इंटरनेशनल ने व्यापार कार्य में लगी हुई कंपनी ब्लैकवुड हॉज (जिम्बाब्वे) प्राइवेट लिमिटेड कंपनी का अधिग्रहण कर लिया और लगभग 2.5 मिलियन यूएस डॉलर का निवेश किया है।

वरूण बीवरेजेज हरारे में 30 मिलियन अमरीकी डॉलर मूल्य का एक बॉटलिंग संयंत्र स्थापित करने की प्रक्रिया में है। 13 नवंबर, 2015 को बॉटलिंग संयंत्र के लिए भूमि पूजन समारोह का आयोजन किया गया।

जगुआर ओवरसीज लिमिटेड ने नवंबर 2015 में मुनयाती विद्युत केंद्र के पुनर्वास के लिए 113 मिलियन अमरीकी डॉलर मूल्य की ई पी सी संविदा प्रात की।

संस्कृति

सांस्कृतिक पक्ष पर, जिम्बाब्वे और भारत ने 1981 में एक करार पर हस्ताक्षर किए थे जिसने वर्ष 1992 से 1994 तक सांस्कृतिक आदान-प्रदान कार्यक्रमों को सुसाध्य बनाया है; परंतु उसके बाद जिम्बाब्वे की ओर से प्रतिक्रिया करने की क्षमता के अभाव में, यहां आने वाले समूहों के हरारे अंतरराष्ट्रीय कला मेले (हीफा) के लिए ही आने से सांस्कृतिक संपर्क एक ही दिशा में रहे हैं।

विगत पांच वर्षों में, एक गांव लोक संगीत एवं नृत्य कला जत्थे; और विश्व विख्यात सुजात हुसैन खान के नेतृत्व में एक शास्त्रीय संगीत समूह; सुश्री शैलजा के नेतृत्व में एक कुचिपुड़ी नृत्य कला जत्थे तथा सुश्री रीला होता के नेतृत्व में एक ओडिसी कला जत्थे; टीवी कलाकार सुश्री प्राची एस. शाह के नेतृत्व में एक पांच सदस्यीय कत्थक कला जत्थे ने 1 से 5 मई 2007 तक हरारे अंतरराष्ट्रीय कला उत्सव में भाग लेने के लिए जिम्बाब्वे का दौरा किया। वर्ष 2008 में, आईसीसीआर द्वारा प्रायोजित दो सांस्कृतिक कला जत्थों –मार्च 2008 में अग्निहोत्री बंधु के 7 सदस्यीय भजन समूह और अक्टूबर 2008 में एक 12 सदस्यीय गुजराती लोक नृत्य समूह "पनघट"– ने जिम्बाब्वे का दौरा किया था। 2009 में सुश्री एस. मेहता के नेतृत्व में एक 5 सदस्यीय कत्थक समूह ने और श्री शिवाजीभाई भोये के नेतृत्व में एक 12 सदस्यीय गुजराती लोक नृत्य समूह ने 27 अप्रैल से 3 मई 2010 तक वार्षिक हरारे अंतरराष्ट्रीय कला उत्सव (हीफा) कार्यक्रम में भाग लिया। आई सी सी आर द्वारा प्रायोजित एक 12 सदस्यीय भांगड़ा मंडली ने 2012 में एच आई एफ ए में भाग लिया। आईसीसीआर द्वारा प्रायोजित एक अन्य गुजराती नृत्य समूह ने नवंबर 2012 में जिम्बाब्वे में लगभग आधा दर्जन प्रस्तुतियां दी। मई 2014 में हरारे अंतरराष्ट्रीय कला उत्सव (हीफा) में एक राजस्थानी नृत्य समूह ने भाग लिया। आई सी सी आर द्वारा प्रायोजित गुजराती डांस ग्रुप ने मई 2015 में एच आई एफ ए में अपनी कला का प्रदर्शन किया और आई सी सी आर द्वारा प्रायोजित एक अन्य 12 सदस्यीय भंगड़ा डांस ग्रुप ने 8 से 10, अक्टूबर, 2015 के दौरान हरारे इंटरनेशनल कार्निवल में भाग लिया।

हरारे में रघु राय द्वारा एक फोटो प्रदर्शनी 'माई लैण्ड माई पीपुल' लगाई गई। 12 फरवरी से 4 मार्च 2015 तक जिंबाब्वे राष्ट्रीय वीथी, हरारे में "गोवा के गिरजाघर तथा ईसाई संस्कृति" शीर्षक से एक अन्य फोटो प्रदर्शनी आयोजित की गई। भारत जिम्बाब्वे के अंतरराष्ट्रीय फिल्म उत्सवों में भी भाग लेता रहा है। आर्ट ऑफ लिविंग तथा ब्रह्मा कुमारी के राजयोग केंद्र के साथ मिलकर दूतावास ने 21 जून 2015 को चांसरी परिसर में पहले अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस का सफल आयोजन किया।

माइकल्स होटल, हरारे में नवंबर 2012, अक्टूबर 2013 और अक्टूबर 2014 में आईटीडीसी के सहयोग से दूतावास द्वारा भारतीय फूड फेस्टिवल के तीन संस्करणों का सफलतापूर्वक आयोजन किया गया था। भारतीय पर्यटन कार्यालय, जोहांसबर्ग ने 18 से 20 जून 2015 तक हरारे में विश्व पर्यटन एक्सपो में भाग लिया तथा लगातार दूसरे साल बेस्ट ओवरआल स्टैंड अवार्ड जीता।

नवंबर 2012 और सितंबर-अक्टूबर 2013 में हरारे में दूतावास के सहयोग से भारतीय हस्तशिल्प निर्यात संवर्धन परिषद द्वारा भारतीय हस्तशिल्प प्रदर्शनियों के दो संस्करणों का आयोजन किया गया।

भारतीय मूल समुदाय

जिम्बाब्वे में भारतीयों की मौजूदगी 1890 से शुरू हुई जब भारतीय पौधारोपण श्रमिक रंगभेद की नीति के शिकार दक्षिण अफ्रीका को पार करके तत्कालीन रोडेशिया में आ गए थे। वर्तमान में भारतीय मूल के जिम्बाब्वे के नागरिकों, जो मुख्यत: गुजरात प्रांत से हैं, की संख्या लगभग 9,000 है। समुदाय ने धार्मिक आधारों पर सोसायटियां बनाई हैं, तथापि वे सद्भावना के साथ रहते हैं। भारतीय मूल के लोगों ने स्वयं को मुख्यत: खुदरा व्यापार अथवा निर्यात-आयात व्यवसाय में लगा रखा है, जबकि युवा पीढ़ी के अधिकांश लोग प्रोफेसनलों के रूप में बेहतर अवसरों के लिए देश से बाहर चले गए हैं। कुछ भारतीय मूल के व्यक्तियों के पास ब्रिटिश/ऑस्ट्रेलियन पासपोर्ट हैं।

जहां तक प्रवासी भारतीय समुदाय का संबंध है, उनकी संख्या 500 है। उ नमें से कुछ दीर्घकालिक व्यावसायिक/कार्य परमिटों पर काम कर रहे हैं जबकि अधिकांश लोग कम्प्यूटर सॉफ्टवेयर, अकाउंटेंसी, बैंकिंग आदि में लगे हुए व्यवसायी हैं।

आम तौर पर, जिम्बाब्वे में भारतीय समुदाय सुसम्मानित है और उसने अधिकांश समुदाय के साथ मधुर संबंध बना कर रखे हैं। सीनेटर के. जी. पटेल सत्तारूढ़ दल के पोलित ब्यूरो और केंद्रीय समिति के सदस्य थे। उनकी मृत्यु वर्ष 2011 में हुई और उन्हें वर्ष 2012 में 'हीरो' का दर्जा दिया गया। श्री भारत पटेल सुप्रीम कोर्ट के न्यायाधीश हैं और न्यायाधीश (सेवानिवृत्त) जस्टिस अहमद इब्राहिम को वर्ष 2004 में प्रवासी भारतीय सम्मान प्रदान किया गया। जस्टिस अहमद इब्राहिम को वर्ष 2004 में प्रवासी भारतीय सम्मान प्रदान किया गया।

उपयोगी संसाधन :

भारतीय दूतावास, हरारे की वेबसाइट:
http://eoi.gov.in/harare/
भारतीय दूतावास, हरारे का फेसबुक पृष्ठ:
https://facebook.com/embindia.harare

***